

डैनियल की पुस्तक - संख्या एक सौ इक्यावन

मंदिर का प्रतीकवाद: दैवीय और मानव के बीच के संबंध के रहस्यों का अनावरण

Jeff Pippenger

2024-03-22

दो छड़ें आपस में मिलकर एक मंदिर बन जाती हैं। छियालिस मंदिर का प्रतीक है, और उत्तरी राज्य के निर्वासन को दक्षिणी राज्य के निर्वासन से अलग करने वाले भी छियालिस वर्ष ही हैं। जब 1798 में अंत के समय पवित्रस्थान और सेना का रौंदा जाना पूरा हो जाता है, तब वही छियालिस वर्ष दो छड़ों को जोड़कर एक मंदिर बना देते हैं। 723 ईसा पूर्व से 677 ईसा पूर्व तक, मंदिर को गिरा दिया गया और रौंदा गया। 1798 में रौंदा जाना समाप्त हुआ, और 1844 तक एक मंदिर खड़ा कर दिया गया था। वहाँ वे एक राजा के साथ एक राष्ट्र बनने वाले थे, और सदा के लिए पाप करना छोड़ देने वाले थे। यही योजना थी, पर 1863 के विद्रोह ने उस योजना को 2001 तक पीछे धकेल दिया।

पौलुस प्रतिपादित करता है कि कलीसिया देह है और मसीह उसका सिर है, और वह देह का प्रयोग मांस के प्रतीक के रूप में करता है। पौलुस के लिए मांस और देह परस्पर विनिमेय पद हैं।

क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार जीवित रहते हो तो मरोगे; परन्तु यदि तुम आत्मा के द्वारा शरीर के कृत्यों को मार डालते हो, तो जीवित रहोगे। रोमियों 8:13.

मनुष्य के मंदिर की रचना, ईश्वर के मंदिर की रचना पर आधारित है। शरीर, जो कलीसिया है, व्यक्ति के मंदिर में मांस के तुल्य है। किसी व्यक्ति के मंदिर में, मन मस्तक है, और शरीर मांस है।

क्योंकि हम उसके शरीर के अंग हैं, उसके मांस के और उसकी हड्डियों के। इस कारण पुरुष अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी के साथ मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। यह भेद बड़ा है, पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ। इफिसियों 5:30-32.

जब सातवें स्वर्गदूत की तुरही के नाद ने परमेश्वर के रहस्य को पूर्ण करने के कार्य के आरम्भ को चिह्नित किया, तब यूहन्ना को जिस मन्दिर को नापना था, वह परमेश्वर का मन्दिर था; परन्तु मनुष्य का मन्दिर परमेश्वर के मन्दिर के प्रतिरूप में निर्मित किया गया था। वे परस्पर विनिमेय प्रतीक हैं। मूसा छियालिस दिनों तक पर्वत पर रहा, जब उसे वह प्रतिमान दिखाया गया जिसका उपयोग उसे पार्थिव मण्डप स्थापित करते समय करना था। वह प्रतिमान स्वर्गीय मन्दिर से लिया गया था।

मसीह स्वर्गीय मंदिर थे, जो देह में प्रकट हुए, और वे मानव मंदिर के प्रतिरूप का प्रतिनिधित्व करते हैं, क्योंकि मनुष्य उनके स्वरूप में रचे गए थे। इसी कारण, मानव मंदिर का प्रतिरूप छियालीस गुणसूत्रों द्वारा निरूपित किया जाता है।

भविष्यवाणी के दृष्टिकोण से मंदिर परस्पर अदल-बदल योग्य हैं। इसलिए, जिस मंदिर को यूहन्ना को नापने के लिए कहा गया था, वह केवल दो कक्षों का था, उसमें कोई प्रांगण नहीं था। पहला कक्ष मानव मंदिर, कलीसिया (दुल्हन), राष्ट्र, देह—अर्थात् मांस—का प्रतिनिधित्व करता है। दूसरा कक्ष दैवीय मंदिर, दूल्हा, राजा, मस्तक—अर्थात् मन—का प्रतिनिधित्व करता है। अंतिम दिनों में एक लाख चवालीस हजार के लिए पूरी होने वाली अनन्त वाचा की प्रतिज्ञा को यहेजकेल अध्याय सैंतीस की दो लकड़ियों द्वारा दर्शाया गया है। इसे यूहन्ना के मंदिर द्वारा भी चित्रित किया गया है, जो दो कक्षों से बना है। इसे पौलुस द्वारा विश्वासियों में मसीह के रहस्य—महिमा की आशा—की विशिष्ट परिभाषाओं से भी स्पष्ट किया गया है।

एक लाख चवालीस हजार पर मुहर लगाए जाने का कार्य, दैवत्व और मानवत्व के स्थायी संयोग का कार्य है। यह कार्य सातवीं तुरही के ध्वनित होने के समय सिद्ध होता है। उस संयोग को पवित्र शास्त्रों में पंक्ति पर पंक्ति, विविध प्रकार से

निरूपित किया गया है। धर्मी ठहराया जाना और पवित्रीकरण इस कार्य के लिए प्रयुक्त धर्मशास्त्रीय पद हैं। धर्मी ठहराया जाना हमारे स्थानापन्न के रूप में मसीह का कार्य है, और पवित्रीकरण हमारे आदर्श के रूप में मसीह का कार्य है। धर्मी ठहराया जाना स्वर्ग के लिए हमारे अधिकार-पत्र का, और पवित्रीकरण स्वर्ग के लिए हमारी योग्यता का प्रतिनिधित्व करता है। ये दोनों कार्य पवित्र आत्मा की उपस्थिति के द्वारा विश्वासियों को प्रदान किए जाते हैं। उस कार्य को उन लोगों के हृदयों और मनों पर परमेश्वर की व्यवस्था लिखे जाने के रूप में निरूपित किया गया है, जो अनन्त वाचा में स्वीकार किए गए हैं।

‘मन’ मंदिर के उस प्रकोष्ठ का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ मस्तक निवास करता है। मन को उच्च प्रकृति कहा जाता है, इसके विपरीत देह निम्न प्रकृति है। मन का प्रतिनिधित्व हमारे विचारों से होता है, देह का प्रतिनिधित्व हमारी भावनाओं से होता है।

कई लोग अनावश्यक दुख का अनुभव करते हैं। वे अपना ध्यान यीशु से हटा लेते हैं और उसे अत्यधिक अपने आप पर केंद्रित कर देते हैं। वे छोटी कठिनाइयों को बढ़ा-चढ़ाकर देखते हैं और निरुत्साहजनक बातें करते हैं। वे परमेश्वर की व्यवस्थाओं के विषय में व्यर्थ शिकायत करने के बड़े पाप के दोषी हैं। जो कुछ हमारे पास है और जो हम हैं, उसके लिए हम परमेश्वर के ऋणी हैं। उसने हमें ऐसी क्षमताएँ दी हैं, जो एक हद तक उन जैसी हैं जो स्वयं उसके पास हैं; और हमें चाहिए कि इन क्षमताओं को विकसित करने के लिए निष्ठापूर्वक परिश्रम करें—अपने आप को प्रसन्न करने और ऊँचा उठाने के लिए नहीं, बल्कि उसकी महिमा के लिए।

हमें अपने मन को परमेश्वर के प्रति निष्ठा से डिगने नहीं देना चाहिए। मसीह के द्वारा हम प्रसन्न हो सकते हैं और होना चाहिए, और आत्म-संयम की आदतें विकसित करनी चाहिए। यहाँ तक कि विचारों को भी परमेश्वर की इच्छा के अधीन किया जाना चाहिए, और भावनाओं को तर्क और धर्म के नियंत्रण में रखा जाना चाहिए। हमारी कल्पना हमें इसलिए नहीं दी गई कि उसे संयम और अनुशासन के किसी भी प्रयास के बिना उच्छृंखल होने और अपनी मनमानी करने दिया जाए। यदि विचार गलत होंगे, तो भावनाएँ भी गलत होंगी; और विचार तथा भावनाएँ मिलकर नैतिक चरित्र का निर्माण करती हैं। जब हम यह ठान लेते हैं कि मसीही होने के नाते हमें अपने विचारों और भावनाओं को संयमित करने की आवश्यकता नहीं है, तब हम दुष्ट स्वर्गदूतों के प्रभाव के अधीन आ जाते हैं, और उनकी उपस्थिति तथा उनके नियंत्रण को आमंत्रित करते हैं। यदि हम अपने आभासों के आगे झुक जाएँ और अपने विचारों को शंका, संदेह और कुढ़न की धारा में बहने दें, तो हम दुखी होंगे, और हमारा जीवन एक असफलता सिद्ध होगा। *Review and Herald*, 21 अप्रैल, 1885.

विचार और भावनाएँ मिलकर नैतिक चरित्र का निर्माण करती हैं। हमारा चरित्र निम्नतर और उच्चतर प्रकृति से बना है; मन उच्चतर प्रकृति है; और यदि मन के विचार पवित्रीकृत हों, तो हमारी भावनाएँ भी पवित्रीकृत होंगी। ऐसा इसलिए है कि हमारी मानवता जिन दो प्रकृतियों से निर्मित है, उनमें मन उच्चतर नियामक प्रकृति है। हमारे अस्तित्व के अंग के रूप में अभिकल्पित की गई "शक्तियाँ" "कुछ हद तक" उन शक्तियों के "समान" हैं जिन्हें मसीह "धारण करते हैं", क्योंकि हम उनके स्वरूप में सृजे गए हैं, और हमें उन "शक्तियों" को विकसित करने के लिए "निष्ठापूर्वक परिश्रम करना चाहिए"।

जो शक्तियाँ मानव की उच्चतर प्रकृति, अर्थात् उसके मन, का भाग हैं, वे हैं—निर्णय-शक्ति, स्मृति, अंतःकरण और विशेषकर इच्छा-शक्ति।

कई लोग पूछते हैं, 'मैं अपने आप को परमेश्वर को कैसे समर्पित करूँ?' आप स्वयं को उसे देना चाहते हैं, पर आप नैतिक शक्ति में दुर्बल हैं, संदेह की गुलामी में हैं, और अपने पापमय जीवन की आदतों के वश में हैं। आपके वचन और संकल्प रेत की रस्सियों के समान हैं। आप अपने विचारों, अपने आवेगों, अपने स्नेह को नियंत्रित नहीं कर सकते। अपने टूटे हुए वचनों और भंग की गई प्रतिज्ञाओं का ज्ञान आपकी अपनी निष्ठा पर आपका भरोसा कमजोर कर देता है, और आपको यह महसूस कराता है कि परमेश्वर आपको स्वीकार नहीं कर सकता; पर आपको निराश होने की आवश्यकता नहीं। आपको जिसे समझने की आवश्यकता है, वह है इच्छाशक्ति का सच्चा बल। यह मनुष्य के स्वभाव में शासन करने वाली शक्ति है—निर्णय या चुनाव की शक्ति। सब कुछ

इच्छाशक्ति के सही उपयोग पर निर्भर करता है। चुनाव की शक्ति परमेश्वर ने मनुष्यों को दी है; उसका प्रयोग करना उनका काम है। आप अपना हृदय नहीं बदल सकते, न ही अपने बल पर उसके स्नेह परमेश्वर को दे सकते हैं; पर आप उसकी सेवा करना चुन सकते हैं। आप अपनी इच्छा उसे दे सकते हैं; तब वह आप में अपनी भली इच्छा के अनुसार चाहने और करने, दोनों के लिए कार्य करेगा। इस प्रकार मसीह का आत्मा आपके पूरे स्वभाव को नियंत्रित करेगा; आपका स्नेह उसी पर केंद्रित होगा, आपके विचार उससे सामंजस्य में होंगे।

भलाई और पवित्रता की इच्छाएँ जितनी दूर तक जाती हैं, उतनी तक तो ठीक हैं; पर यदि आप यहीं रुक जाएँ, तो उनका कोई लाभ नहीं होगा। बहुत से लोग मसीही बनने की आशा और इच्छा करते हुए ही नाश हो जाएँगे। वे इस बिंदु तक नहीं पहुँचते कि अपनी इच्छा परमेश्वर को समर्पित कर दें। वे अभी मसीही बनना चुनते ही नहीं।

इच्छाशक्ति का सही प्रयोग करने से आपके जीवन में संपूर्ण परिवर्तन आ सकता है। अपनी इच्छा मसीह को समर्पित कर देने से, आप स्वयं को उस शक्ति के साथ जोड़ लेते हैं जो सब प्रधानताओं और शक्तियों से ऊपर है। आपको ऊपर से ऐसी शक्ति मिलेगी जो आपको दृढ़ बनाए रखेगी, और इस प्रकार परमेश्वर के प्रति निरंतर समर्पण के द्वारा आप नए जीवन, अर्थात् विश्वास के जीवन, को जीने में सक्षम हो जाएँगे। मसीह की ओर कदम, 47, 48.

इच्छाशक्ति मानव-स्वभाव में 'शासक शक्ति' है, और यह शासक मानवीय मंदिर के उस प्रकोष्ठ में स्थित है जो 'सब प्रधानताओं और अधिकारों से ऊपर की शक्ति' से संबद्ध है। मानवीय मंदिर में जहाँ दैवत्व और मानवत्व का संयोग होता है, वही आत्मा का दुर्ग है। प्रत्येक मनुष्य का एक दुर्ग होता है, और उसमें या तो मसीह का वास होता है, या मसीह के परम शत्रु का।

"जब मसीह आत्मा के गढ़ पर अधिकार कर लेते हैं, तो मनुष्य उनके साथ एक हो जाता है। और जो मसीह के साथ एक है, इस एकता को बनाए रखते हुए, उन्हें हृदय के सिंहासन पर बिठाकर और उनकी आज्ञाओं का पालन करके, दुष्ट के फंदों से सुरक्षित रहता है। मसीह से संयुक्त होकर, वह मसीह के अनुग्रह अपने लिए एकत्र करता है, और आत्माओं को उनके लिए जीतने में अपने बल, दक्षता और सामर्थ्य को प्रभु को समर्पित करता है। उद्धारकर्ता के साथ सहकार्य करके वह वह साधन बन जाता है जिसके द्वारा परमेश्वर कार्य करता है। तब जब शैतान आता है और आत्मा पर अधिकार करने का प्रयास करता है, तो वह पाता है कि मसीह ने उसे हथियारबंद बलवान से भी अधिक बलवान बना दिया है।" Review and Herald, 12 दिसंबर, 1899.

आत्मा का दुर्ग मनुष्य का हृदय और मन है। नई वाचा का वचन विश्वासी के लिए तीन मुख्य प्रतिज्ञाएँ निर्दिष्ट करता है। उसे रहने के लिए एक भूमि का वचन दिया गया है, जैसी कि अदन की वाटिका आदम और हव्वा के लिए थी, जो आगे चलकर प्राचीन इस्राएल के साथ उसकी वाचा के प्रतिज्ञात देश का प्रतीक थी, जो आगे चलकर आत्मिक इस्राएल के लिए आत्मिक महिमामय भूमि का प्रतीक थी, और ये तीनों ही रेखा पर रेखा नव-निर्मित पृथ्वी के वचन की साक्षी प्रदान करते हैं, उनके लिए जो वैसे ही जय पाते हैं जैसे उसने पाई।

जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तो उन्हें "सात काल" के लिए एदन की वाटिका से "तितर-बितर" कर दिया गया; और सात सहस्राब्दियों के बाद पृथ्वी नई बनाई जाती है, और एदन की वाटिका पुनर्स्थापित होती है। "सात काल" तक प्राचीन इस्राएल का तितर-बितर होना, आदम और हव्वा के तितर-बितर होने का प्रतिरूप था। वाचा बसने के लिए एक देश का वादा करती है, और यह एदन की पुनर्स्थापना का वादा था। पवित्रस्थान और सेना को रौंदा जाना मानव परिवार के भीतर पाप की उस क्रमिक वृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है जो आदम के पाप से आरम्भ हुई।

वाचा की अन्य दो प्रतिज्ञाएँ यह हैं कि विश्वासयोग्य जनों को नई देह और नया मन—अर्थात् मसीह का ही मन—प्राप्त होगा। देह का अभिप्राय "मांस", अर्थात् निम्न प्रकृति से है; और मसीह के संदर्भ में "देह" कलीसिया को सूचित करती है। मन उच्चतर प्रकृति है; और इसी को बहन वाइट "आत्मा का दुर्ग" के रूप में निरूपित करती हैं। पौलुस स्पष्ट रूप से सिखाते हैं कि जब हम सुसमाचार की आवश्यकताओं को स्वीकार करते हैं—अर्थात् जब हम धर्मी ठहराए जाते हैं—उसी क्षण हम मसीह का मन प्राप्त करते हैं। वे यह भी सिखाते हैं कि मसीह के दूसरे आगमन तक

हमें नई और महिमामय देह प्राप्त नहीं होती।

देखो, मैं तुम्हें एक रहस्य बताता हूँ: हम सब नहीं सोएंगे, पर हम सब बदल दिए जाएंगे, एक ही क्षण में, पलक झपकते ही, अंतिम तुरही पर; क्योंकि तुरही बजेगी, और मरे हुए अविनाशी होकर उठाए जाएंगे, और हम बदल दिए जाएंगे। क्योंकि इस नाशवान को अविनाशिता धारण करना आवश्यक है, और इस मर्त्य को अमरता धारण करना आवश्यक है। और जब यह नाशवान अविनाशिता धारण कर लेगा, और यह मर्त्य अमरता धारण कर लेगा, तब वह वचन पूरा होगा जो लिखा है, "मृत्यु विजय में निगल ली गई है।" हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ है? हे कब्र, तेरी विजय कहाँ है? मृत्यु का डंक पाप है; और पाप की शक्ति व्यवस्था है। 1 कुरिन्थियों 15:51-56.

एक सिद्धांत—जिसके बारे में योहन कहते हैं कि यह ऐसी भ्रामक शिक्षाओं पर विश्वास करने वालों को 'विरोधी मसीह' ठहराता है—यह तर्क देता है कि मसीह ने कभी ऐसी देह नहीं धारण की जो पाप के उन प्रभावों के अधीन थी, जो आदम के पाप के बाद से मानव परिवार पर पड़ने लगे थे।

और हर वह आत्मा जो यह स्वीकार नहीं करती कि यीशु मसीह देह में आ चुका है, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है; और यही मसीह-विरोधी की आत्मा है, जिसके विषय में तुमने सुना है कि वह आनेवाला है; और अब भी वह जगत में है। 1 यूहन्ना 4:3.

बाबुल की दाखमधु (विरोधी मसीह), जो 'निष्कलंक गर्भाधान' सिखाती है, यह दावा करती है कि मरियम को पाप से पहले के आदम और हव्वा की तरह परिपूर्ण बनाया गया, ताकि यीशु का जन्म दैवी गर्भाधान (पवित्र आत्मा द्वारा) और परिपूर्ण मानवता (मरियम) पर आधारित हो। 'निष्कलंक गर्भाधान' का झूठा सिद्धांत इस बात को नहीं संबोधित करता कि मरियम के गर्भ में यीशु कब गर्भित हुए, बल्कि यह कि मरियम स्वयं किस प्रकार आदम और हव्वा की परिपूर्णता के साथ गर्भित हुईं। यह कहना कि मनुष्य का उद्धार करने के लिए जब मसीह आए तो उन्होंने जो देह धारण की, वह निष्पाप देह थी, जिसमें वंशगत प्रभाव नहीं थे—विरोधी मसीह की शिक्षा है।

क्योंकि बहुत-से धोखेबाज़ संसार में निकल आए हैं, जो यह स्वीकार नहीं करते कि यीशु मसीह देह में आया है। ऐसा व्यक्ति धोखेबाज़ और मसीह-विरोधी है। 2 यूहन्ना 1:7.

जब मसीह का पुनरुत्थान हुआ, तो प्रेरणा स्पष्ट रूप से बताती है कि तब उनकी देह महिमामय थी। उनके पुनरुत्थान ने दूसरे आगमन पर धर्मियों के पुनरुत्थान का प्रतिनिधित्व किया, और वहीं हमें नई देह की वाचा की प्रतिज्ञा प्राप्त होती है।

"वह समय आ गया था जब मसीह अपने पिता के सिंहासन पर आरोहित होने वाले थे। एक दिव्य विजेता के रूप में वे विजय के प्रतीकों के साथ स्वर्गीय दरबारों में लौटने वाले थे। अपनी मृत्यु से पहले उन्होंने अपने पिता से कहा था, 'जिस काम को तू ने मुझे करने के लिए दिया था, उसे मैं ने पूरा कर दिया है।' यूहन्ना 17:4। अपने पुनरुत्थान के बाद वे कुछ समय के लिए पृथ्वी पर ठहरे, ताकि उनके शिष्य उनके जी उठे और महिमामय शरीर में उनसे भली-भाँति परिचित हो जाएँ। अब वे विदा लेने के लिए तैयार थे। उन्होंने इस तथ्य की पुष्टि कर दी थी कि वे एक जीवित उद्धारकर्ता हैं। अब उनके शिष्यों को उन्हें कब्र के साथ जोड़कर देखने की आवश्यकता नहीं रही थी। वे उन्हें समस्त स्वर्गीय ब्रह्मांड के सामने महिमित समझ सकते थे।" युगों की अभिलाषा, 829।

बसने के लिए भूमि की वाचा की प्रतिज्ञा नव-निर्मित पृथ्वी पर पूरी होती है, जब अदन पुनर्स्थापित होता है और प्रथम आदम की मानवता का "सात बार" (सात हज़ार वर्ष) का बिखराव समाप्त होता है। नए और महिमामय शरीर की वाचा की प्रतिज्ञा दूसरे आगमन पर, पलक झपकते ही, दी जाती है।

बेतलेहम की कथा एक अक्षय विषय है। उसमें 'परमेश्वर की बुद्धि और ज्ञान, दोनों के धन की गहराई' छिपी हुई है। रोमियों 11:33। हम उद्धारकर्ता के उस बलिदान पर चकित होते हैं कि उन्होंने स्वर्ग का सिंहासन छोड़कर चरनी को, और आराधना करने वाले स्वर्गदूतों की संगति छोड़कर तबेले के पशुओं का साथ स्वीकार किया। उनकी उपस्थिति में मानवीय घमण्ड और आत्म-पर्याप्तता ताड़ना पाती है। फिर भी यह उनकी अद्भुत दीनता का

केवल आरम्भ भर था। यह परमेश्वर के पुत्र के लिए मनुष्य का स्वभाव ग्रहण करना लगभग असीम दीनता होती—यहाँ तक कि तब भी जब आदम एदन में अपनी निर्दोषता में खड़ा था। परन्तु यीशु ने मानवता को तब स्वीकार किया जब मानव वंश चार हज़ार वर्षों के पाप से दुर्बल हो चुका था। आदम की हर संतान की तरह उन्होंने आनुवंशिकता के महान नियम के कार्य के परिणामों को स्वीकार किया। ये परिणाम क्या थे, यह उनके सांसारिक पूर्वजों के इतिहास में प्रकट होता है। वे ऐसी ही आनुवंशिक विरासत के साथ हमारे दुःखों और प्रलोभनों में सहभागी होने, और हमें निष्पाप जीवन का उदाहरण देने आए। युगों की अभिलाषा, 48.

जब कोई व्यक्ति सुसमाचार की माँगों को पूरा करता है, तो वह उसी समय एक नया मन प्राप्त करता है—अर्थात् मसीह का मन; परन्तु शरीर, या जैसा कि पौलुस इसे 'देह' भी कहता है, दूसरे आगमन पर बदला जाएगा। मनुष्य की निम्न प्रकृति, जो भावनाओं से बनी है, परिवर्तन के समय समाप्त नहीं होती। ये भावनाएँ, जो नैतिक चरित्र का एक भाग हैं, दूसरे आगमन तक बनी रहती हैं। ये भावनाएँ उस भावनात्मक तंत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं जो हार्मोनल तंत्र से जुड़ा है। ये उन इंद्रियों का भी प्रतिनिधित्व करती हैं जो तंत्रिका तंत्र से संबद्ध हैं। मनुष्य की निम्न प्रकृति के वे सभी तत्व, जिन्हें भावनाएँ माना जाता है, दो मूलभूत श्रेणियों में विभाजित हैं। एक प्रकार वे प्रवृत्तियाँ हैं जो हमें अपने पूर्वजों से विरासत में मिली हैं; और दूसरा प्रकार वे परिपोषित प्रवृत्तियाँ हैं जिन्हें हमने अपने स्वयं के चयन से विकसित किया है।

कुछ वंशानुगत प्रवृत्तियाँ मात्र मानव रचना का हिस्सा होती हैं, और कुछ प्रकार की वंशानुगत प्रवृत्तियाँ बुराई करने की होती हैं। संस्कारित प्रकार की भावनाएँ वे हैं जिन्हें हम अपने स्वयं के चयन से विकसित करते हैं, और वंशानुगत प्रवृत्तियाँ "वंशानुक्रम का महान नियम" द्वारा संचारित होती हैं।

यीशु ने "जब मानव जाति चार हज़ार वर्षों के पाप से दुर्बल हो चुकी थी, तब मनुष्यत्व को धारण किया। आदम की प्रत्येक संतान की भाँति उसने वंशानुक्रम के महान नियम की क्रिया के परिणामों को स्वीकार किया। ये परिणाम क्या थे, यह उसके सांसारिक पूर्वजों के इतिहास में परिलक्षित होता है। वह ऐसे ही वंशानुक्रम के साथ हमारे दुःखों और प्रलोभनों में सहभागी होने, और हमें निष्पाप जीवन का आदर्श देने के लिए आया।" वंशानुक्रम के महान नियम के चार हज़ार वर्षों तक क्रियाशील रहने से उत्पन्न परिणामों सहित, यीशु ने अपनी इच्छाशक्ति का प्रयोग करके उन प्रवृत्तियों को सदैव वश में रखा, और उसने पापमय भावनाओं का कदापि पोषण नहीं किया।

यदि यीशु ने ऐसा मानव शरीर ग्रहण किया होता जैसा आदम और हव्वा के पाप करने से पहले था, और चार हज़ार वर्षों की अवनति से मानवता में आई दुर्बलता के परिणामों को स्वीकार किए बिना, तो वे यह उदाहरण न देते कि परमेश्वर की प्रत्येक संतान कैसे विजय प्राप्त कर सकती है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

बहुत से लोग मसीह और सैतान के बीच इस संघर्ष को अपने जीवन से कोई विशेष संबंध न रखने वाली बात समझते हैं; और इसलिए उन्हें इसमें बहुत कम रुचि होती है। परन्तु हर मानव हृदय के क्षेत्र में यह संग्राम दोहराया जाता है। कभी ऐसा नहीं होता कि कोई बुराई के शिविर को छोड़कर परमेश्वर की सेवा में आए और सैतान के आक्रमणों का सामना न करे। जिन प्रलोभनों का मसीह ने प्रतिरोध किया, वे वही थे जिनका सामना करना हमें अत्यंत कठिन लगता है। उनका चरित्र जितना हमारी अपेक्षा श्रेष्ठ था, उतनी ही अधिक प्रबलता से वे प्रलोभन उन पर डाले गए। संसार के पापों का भयानक भार अपने ऊपर लिए हुए, मसीह ने भूख-लालसा की, संसार-प्रेम की, और उस दिखावे के प्रेम की परीक्षाओं में दृढ़ता से ठहरकर विजय पाई, जो धृष्टता की ओर ले जाता है। ये वही प्रलोभन थे जिन्होंने आदम और हव्वा को परास्त किया, और जो हमें भी बहुत आसानी से परास्त कर देते हैं।

सैतान ने आदम के पाप की ओर यह प्रमाण दिखाते हुए संकेत किया कि परमेश्वर की व्यवस्था अन्यायपूर्ण है, और उसका पालन किया नहीं जा सकता। हमारे ही मानव स्वभाव में, मसीह को आदम की विफलता की भरपाई करनी थी। परन्तु जब प्रलोभक ने आदम की परीक्षा ली, तब उस पर पाप के कोई प्रभाव नहीं था। वह परिपूर्ण पुरुषत्व की सामर्थ्य में खड़ा था, मन और देह की सम्पूर्ण शक्ति से युक्त। वह एदन की महिमाओं से घिरा हुआ

था, और स्वर्गीय प्राणियों के साथ प्रतिदिन संगति में रहता था। परन्तु जब यीशु शैतान का सामना करने के लिए जंगल में गए, तो उनके लिए ऐसा नहीं था। चार हजार वर्षों से मानव जाति शारीरिक बल, मानसिक शक्ति और नैतिक मूल्य में घटती चली आ रही थी; और मसीह ने पतित मानवता की दुर्बलताएँ अपने ऊपर ले लीं। केवल इसी प्रकार वह मनुष्य को उसके पतन की सबसे निचली गहराइयों से उद्धार कर सकता था।

बहुत से लोग दावा करते हैं कि प्रलोभन से मसीह का पराजित होना असंभव था। तब वे आदम की स्थिति में रखे ही नहीं जा सकते थे; वह विजय भी वे प्राप्त नहीं कर सकते थे जो आदम प्राप्त करने में असफल रहा। यदि किसी भी अर्थ में हमारा संघर्ष मसीह के संघर्ष से अधिक कठिन है, तो वे हमारी सहायता करने में समर्थ न होते। परन्तु हमारे उद्धारकर्ता ने मनुष्यत्व को उसकी समस्त सीमाओं सहित धारण किया। उन्होंने मनुष्य का स्वभाव लिया, जिसमें प्रलोभन के आगे झुकने की संभावना भी थी। हमें ऐसा कुछ भी नहीं सहना पड़ता जो उन्होंने न सहा हो।

मसीह के साथ भी, जैसे एदन में पवित्र दम्पति के साथ, पहले महान प्रलोभन का आधार रसना-लालसा ही थी। ठीक वहीं जहाँ पतन आरम्भ हुआ था, वहीं से हमारे उद्धार का कार्य आरम्भ होना आवश्यक था। जैसे रसना-लालसा की तृप्ति के कारण आदम गिर पड़ा, वैसे ही रसना-लालसा का त्याग करके मसीह को विजय पानी थी। 'और जब उसने चालीस दिन और चालीस रात उपवास किया, तो उसके बाद उसे भूख लगी। और जब प्रलोभक उसके पास आया, तो उसने कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो आज्ञा दे कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ। परन्तु उसने उत्तर दिया, लिखा है: मनुष्य केवल रोटी से नहीं जीएगा, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है।'

"आदम के समय से लेकर मसीह के समय तक, भोग-विलास ने भोग-लालसाओं और वासनाओं की शक्ति को इतना बढ़ा दिया था कि उन्हें लगभग असीमित नियंत्रण प्राप्त हो गया था। इस प्रकार मनुष्य पतित और रोगग्रस्त हो गए थे, और अपने ही बल पर उन पर विजय पाना उनके लिए असंभव था। मानवता की ओर से, मसीह ने सबसे कठोर परीक्षा सहकर विजय प्राप्त की। हमारे लिए उन्होंने ऐसा आत्म-संयम प्रदर्शित किया जो भूख या मृत्यु से भी अधिक शक्तिशाली था। और इस पहली विजय में वे अन्य पहलू भी सम्मिलित थे जो अंधकार की शक्तियों से हमारे हर संघर्ष में शामिल होते हैं।" *The Desire of Ages*, 117.